बाल विज्ञान

प्रथम-भाग

रचयिता

संकलन-सम्पादन

प्रज्ञा श्रमण मुनि अमितसागर

प्रकाशक

श्री धर्मश्रुत शोध संस्थान,

श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर नसिया जी

कोटला रोड़, फिरोजाबाद (उ०प्र०)

कृति – बाल विज्ञान, प्रथम-भाग, पुष्प संख्या - षष्ठम

कृतिकार - प्रज्ञा श्रमण मुनि अमितसागर

पावन प्रसंग - बीसवीं शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैन आचार्य चारित्र चक्रवर्ती श्री शान्तिसागर जी महाराज के तृतीय पट्टाधीश आचार्य शिरोमणि श्री धर्मसागर जी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष १९१३-२०१४ के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

[पुस्तक प्राप्ति स्थान]

१. चन्द्रा कापी हाऊस, हास्पिटल रोड, आगरा (उ० प्र०)

२. वास्ट जैन फाउण्डेशन ५९/२ बिरहाना रोड़ , कानपुर (उ० प्र०)
मो० : **09451875448**

३. आलोक जैन, हनुमानगंज
C/O श्री दिगम्बर जैन रत्नत्रय मन्दिर नसिया जी, कोटला रोड़,
फिरोजाबाद (उ० प्र०) मो०: **09997543415**

४. आचार्य श्री शिवसागर ग्रन्थमाला, श्री शान्तिवीर नगर,
श्री महावीर जी, जि० करौली (राज०)

५. श्री दि० जैन अष्टापद तीर्थ, विलासपुर चौक, धारूहेड़ा,
गुडगांव (हरि०) मो०: **09312837240**

६. आर्ष ग्रन्थालय, जैन बाग, सहारनपुर (उ० प्र०)
मो०: **09410874703**

७. विशुद्ध ग्रन्थालय, सर्वऋतु विलास, उदयपुर (राजस्थान)

कम्पोजिंग - वर्धमान कम्प्युटर, फिरोजाबाद (यू०पी०)

संशोधित संस्करण -प्रथम; सन् २०१४,

प्रतियाँ - २०००

मूल्य - १५ रूपये

मुद्रक - चन्द्रा कापी हाऊस, आगरा (उ० प्र०) मो० : **09412260879**

प्रज्ञाश्रमण मुनि

बाल विज्ञान

भाग १

इष्ट - प्रार्थना

ध्यान करेंगे ध्यान करेंगे ।
हम सब मिलकर ध्यान करेंगे ॥
पंच प्रभो! का ध्यान करेंगे ।
अरिहंतों की शरण रहेंगे ॥
सिद्धों का गुणगान करेंगे ।
आचार्यों की सेवा करेंगे ॥
उपाध्याय से ज्ञान करेंगे ।
सर्व साधु को शीश नमेंगे ॥
रात्रि भोजन नहीं करेंगे ।
बिना छना जल नहीं पियेंगे ॥
धर्म शास्त्र को रोज पढ़ेंगे ।
सप्त व्यसन से दूर रहेंगे ॥
भक्त बनें भगवान बनेंगे ।
"अमित" सौख्य रस - पान करेंगे ॥

विश्व मंत्र - णमोकार

प्रश्न १ - विश्व का सबसे बडा मंत्र कौन-सा है ?

उत्तर - विश्व का सबसे बडा मंत्र णमोकार है ।

प्रश्न २ - णमोकार किसे कहते हैं ?

उत्तर - नमस्कार करने को णमोकार कहते हैं ।

प्रश्न ३ - मंत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर - सच्ची श्रद्धा से भरा हुआ मन ही मंत्र कहलाता है ।

प्रश्न ४ - णमोकार मंत्र किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिस मंत्र में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है, उस मंत्र को णमोकार मंत्र कहते हैं ।

प्रश्न ५ - णमोकार मंत्र कौन - सा है ?

उत्तर - णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,णमो लोए सव्व साहूणं ।

प्रश्न ६ - णमोकार मंत्र का अर्थ गाकर सुनाओ ?

उत्तर - अरिहंतों को नमस्कार,
सब सिद्धों को नमस्कार,
आचार्यों को नमस्कार,
उपाध्यायों को नमस्कार,
जग में जितने साधुगण हैं -
उन सबको वन्दू बार - बार ।

प्रश्न ७ - नमस्कार क्यों किया जाता है ?

उत्तर - उत्तम गुणों की प्राप्ति के लिए नमस्कार किया जाता है ।

प्रश्न ८ - णमोकार मंत्र कौन-सी भाषा में बोला जाता है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र प्राकृत - भाषा में बोला जाता है ।

प्रश्न ९ - प्राकृत - भाषा किसे कहते हैं ?

उत्तर - सहज - सरल अकृत्रिम भाषा को प्राकृत भाषा कहते हैं ।

प्रश्न १० - जैनों की मूल भाषा कौन-सी है ?

उत्तर - जैनों की मूल भाषा प्राकृत है, क्योंकि बचपन से ही णमोकार मंत्र, उसका माहात्म्य एवं चत्तारि दण्डक; ये सब प्राकृत भाषा में बोलना सिखाते हैं, अतः जैनों की मूल भाषा प्राकृत है ।

प्रश्न ११ - णमोकार मंत्र कौन - से छन्द में पढ़ा जाता है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र आर्या छन्द में पढ़ा जाता है ।

प्रश्न १२ - शुद्ध णमोकार मंत्र कितनी श्वांसोच्छ्वास में पढ़ना चाहिए ?

उत्तर - शुद्ध णमोकार मंत्र तीन श्वांसोच्छ्वास में पढ़ना चाहिए ।

प्रश्न १३ - णमोकार मंत्र किसने बनाया ?

उत्तर - णमोकार मंत्र किसी ने नहीं बनाया; यह अनादि - निधन मंत्र है ।

प्रश्न १४ - णमोकार मंत्र में कितने पद; कितने अक्षर; कितने व्यञ्जन; कितने स्वर एवं कितनी मात्राएँ हैं ?

उत्तर - णमोकार मंत्र में ५ पद; ३५ अक्षर; ३० व्यञ्जन; ३५ स्वर एवं ५८ मात्रायें हैं ।

प्रश्न १५ - णमोकार मंत्र में किनको नमस्कार किया जाता है ?

उत्तर - णमोकार मंत्र में पंच परमेष्ठियों को नमस्कार किया जाता है ।

प्रश्न १६ - परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो परम पद में विराजमान हों; उन्हें परमेष्ठी कहते हैं ।

प्रश्न १७ - पाँचों परमेष्ठियों के नाम बताइये ?

उत्तर - १ - अरिहंत परमेष्ठी; २ - सिद्ध परमेष्ठी;
३ - आचार्य परमेष्ठी; ४ - उपाध्याय परमेष्ठी;
५ - साधु परमेष्ठी ।

प्रश्न १८ - पंच परमेष्ठियों में सबसे बड़े एवं सबसे छोटे परमेष्ठी का नाम क्या है ?

उत्तर - सबसे बड़े सिद्ध एवं सबसे छोटे साधु परमेष्ठी हैं ।

प्रश्न १९ - कितने परमेष्ठी वर्तमान में प्रत्यक्ष हैं ?

उत्तर - वर्तमान के भरत क्षेत्र में आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु; तीन परमेष्ठी प्रत्यक्ष हैं ।

प्रश्न २० - कितने परमेष्ठी संसारी हैं ?

उत्तर - चार परमेष्ठी - अरिहंत ईषत् संसारी, आचार्य, उपाध्याय और साधु; संसारी हैं ।

प्रश्न २१ - कितने परमेष्ठी इन्द्रिय सहित हैं ?

उत्तर - चार परमेष्ठी - अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु; इन्द्रिय सहित हैं ।

प्रश्न २२ - कितने परमेष्ठी मन सहित होते हैं ?

उत्तर - चार परमेष्ठी - अरिहंत; भाव मन रहित एवं द्रव्य मन सहित है तथा आचार्य, उपाध्याय और सर्वसाधु; द्रव्य-भाव मन सहित होते हैं ।

प्रश्न २३ - कितने परमेष्ठी इन्द्रिय एवं मन का उपयोग करते हैं ?

उत्तर - तीन परमेष्ठी - आचार्य, उपाध्याय और साधु; इन्द्रिय एवं मन का उपयोग करते हैं ।

प्रश्न २४ - कितने परमेष्ठी कवल-आहार करते हैं ?

उत्तर - तीन परमेष्ठी - आचार्य, उपाध्याय और साधु; कवल - आहार करते हैं ।

प्रश्न २५ - कितने परमेष्ठी शरीर सहित होते हैं ?

उत्तर - चार परमेष्ठी - अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु; शरीर सहित होते हैं ।

प्रश्न २६ - कितने परमेष्ठी विहार करते हैं ?

उत्तर - चार परमेष्ठी - अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु; विहार करते हैं ।

प्रश्न २७ - कितने परमेष्ठी केशलोंच करते हैं ?

उत्तर - तीन परमेष्ठी - आचार्य, उपाध्याय और साधु; केशलोंच करते हैं ।

प्रश्न २८ - कितने परमेष्ठी संसार में केवलज्ञान सहित रहते हैं ?

उत्तर - एक परमेष्ठी - अरिहंत; संसार में केवलज्ञान सहित रहते हैं ।

प्रश्न २९ - कितने परमेष्ठी अवधिज्ञानी एवं मनःपर्ययज्ञानी हो सकते हैं ?

उत्तर - तीन परमेष्ठी - आचार्य, उपाध्याय और साधु; अवधिज्ञानी एवं मनःपर्ययज्ञानी हो सकते हैं ।

प्रश्न ३० - कितने परमेष्ठी कषाय रहित हैं ?

उत्तर - दो परमेष्ठी - अरिहंत और सिद्ध; कषाय रहित हैं ।

प्रश्न ३१ - कितने परमेष्ठियों का उपदेश होता है ?

उत्तर - चार परमेष्ठी - अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और सर्वसाधु का उपदेश होता है ।

प्रश्न ३२ - कितने परमेष्ठी के पिच्छी-कमण्डल नहीं होते हैं ?

उत्तर - दो परमेष्ठी - अरिहंत और सिद्ध के पिच्छी-कमण्डल नहीं होते हैं ।

प्रश्न ३३ - णमोकार मंत्र का क्या महत्त्व है ?

उत्तर - एसो पंच णमोकारो, सव्व - पावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढ़मं हवइ मंगलं ॥

प्रश्न ३४ - णमोकार मंत्र के महत्त्व का अर्थ बताइये ?

उत्तर - यह पंच नमस्कार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है ।

यह पंच नमस्कार मंत्र, नाशता सब पापों को ।
मंगलों में सबसे पहला, मंगल कहलाता वो ॥

रोग से बचो

चल रे भाई ! नल पर चल -
जल भरने को नल पर चल ।
जल छानकर नल से भर -
जल कपड़े से छान के भर ।
बिना छना जल मत भरना -
बिना छना जल मत पीना ।
जल में छोटे कीड़े हैं -
किल - बिल किल - बिल करते हैं ।
आँखों से न दिखते हैं -
इतने छोटे होते हैं ।
पेट में जाकर मरते हैं -
रोग को पैदा करते हैं ।
हमें रोग से बचना है -
अतः छना जल पीना है ।

प्रश्न १ - जल किससे छानना चाहिए ?

उत्तर - जल दोहरे कपड़े से छानना चाहिए ।

प्रश्न २ - जल कैसा पीना चाहिए ?

उत्तर - जल छना हुआ पीना चाहिए ।

प्रश्न ३ - बिना छनें जल में क्या होते हैं ?

उत्तर - बिना छनें जल में छोटे - छोटे कीड़े होते हैं, जो आँखों से नहीं दिखते हैं ।

प्रश्न ४ - बिना छना जल पीने से हानि बताओ ?

उत्तर - बिना छना जल पीने से छोटे - छोटे जीव मरते हैं, जिससे पाप होता हैं तथा नारु जैसे रोग भी हो जाते हैं, अतः जल छान कर ही पीना चाहिए ।

मंगल - उत्तम - सरण

प्रश्न १ - मंगल किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो पापों का नाश करे और पुण्य की वृद्धि करे; उसे मंगल कहते हैं ।

प्रश्न २ - लोक में मंगल कितने एवं कौन-से हैं ?

उत्तर - (मंगल चार होते हैं) चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं,
सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं ।

प्रश्न ३ - चारों मंगलों का अर्थ गाकर सुनाओ ?

उत्तर - मंगल चार ही होते हैं, सब पापों को धोते हैं,
अरिहंतों का पहला मंगल, सिद्ध ही मंगल दूजा है ।
साधुजन का तीसरा मंगल, धर्म ही मंगल चौथा है,
मंगल पाप का नाशक है, आनन्द मंगल दायक है ।।

प्रश्न ४ - उत्तम किसे कहते हैं ?

उत्तर - संसार में जो सबसे निर्दोष हों; उन्हें उत्तम कहते हैं ।

प्रश्न ५ - संसार (लोक) में कितने एवं कौन-से उत्तम हैं ?

उत्तर - (लोक में चार उत्तम हैं) चत्तारि लोगुत्तमा,
अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा,
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।

प्रश्न ६ - चारों उत्तम का अर्थ गाकर सुनाओ ?

उत्तर - उत्तम चार ही होते हैं, सभी सुखों को देते हैं,
अरिहंतों का पहला उत्तम, सिद्ध ही उत्तम दूजा है ।
साधुजन का तीसरा उत्तम, धर्म ही उत्तम चौथा है,
उत्तम सब फल लायक है, जीवन सब सुख दायक है ।।

प्रश्न ७ - शरण किसे कहते हैं ?

उत्तर - संसार के दुःखों से भयभीत प्राणियों के सहारे को शरण कहते हैं।

प्रश्न ८ - हमें किनकी शरण में रहना चाहिए ?

उत्तर - (हमें चार की शरण में रहना चाहिए) चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि,
अरिहंता सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धा सरणं पव्वज्ञामि,
साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।

प्रश्न ९ - चारों शरण का अर्थ गाकर सुनाओ ?

उत्तर - शरण चार ही होती हैं, भय से रक्षा करती हैं,
अरिहंतों की पहली शरणा, सिद्ध ही शरणा दूजी है।
साधुजन की तीसरी शरणा, धर्म ही शरणा चौथी है,
शरण जीव को रहती है, सब संकट को हरती है॥

प्रश्न १० - नमस्कार करते हुए किन्हें; क्या बोलना चाहिए ?

उत्तर - (१) पंच परमेष्ठियों को - **नमोऽस्तु - नमोऽस्तु - नमोऽस्तु।**
(२) आर्यिका माता जी को - **वन्दामि - वन्दामि - वन्दामि।**
(३) ऐलक, क्षुल्लक एवं क्षुल्लिका जी को - **इच्छामि या इच्छाकार।**
(४) त्यागी, व्रती, ब्रह्मचारी जी एवं ब्रह्मचारिणी जी को - **वन्दना।**
(५) साधर्मी को - **जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र - जय जिनेन्द्र।**

समवशरण

तीर्थङ्कर का समवशरण है -
जिस कुबेर रचाते हैं ।
देव - इन्द्र - नर - सिंह आदि संग -
प्रभु पूजा को आते हैं ।
लगीं सभा बारह हैं जिसमें -
सबके मन को भाते हैं ।
समवशरण में सब मिलते हैं -
चूहा - बिल्ली गले - गले ।
क्रूर सिंह से, नम्र गाय मिल -
आपस में ही साथ चले ।
सर्प मोर के पास में बैठा -
मेंढ़क सर्प से धूप बचें ।
हम सब मिलकर भाई - भाई सम -
समता का यह पाठ पढ़ें ।

प्रश्न १ - समवशरण किसे कहते हैं ?

उत्तर - तीर्थङ्करों की सभा को समवशरण कहते हैं ।

प्रश्न २ - समवशरण की रचना कौन करते हैं ?

उत्तर - समवशरण की रचना कुबेर करते हैं ।

प्रश्न ३ - प्रभु पूजा को कौन - कौन आते हैं ?

उत्तर - देव - इन्द्र, मनुष्य, सिंह आदि आते हैं ।

प्रश्न ४ - समवशरण में सब जीव कैसे मिलते हैं ?

उत्तर - समवशरण में सब जीव वैर-विरोध छोड़कर मिलते हैं ।

प्रश्न ५ - समवशरण में कितनी सभायें हैं ?

उत्तर - समवशरण में बारह सभायें हैं ।

प्रश्न ६ - समवशरण से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

उत्तर - समवशरण से हमें वैर-विरोध छोड़ने की शिक्षा मिलती है ।

तीर्थङ्कर

प्रश्न १ - तीर्थङ्कर किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो संसार के समस्त जीवों को; सच्चा उपदेश देकर भव सागर से तिराते है; उन्हें तीर्थङ्कर कहते हैं ।

प्रश्न २ - तीर्थङ्कर कितने होते हैं ?

उत्तर - तीर्थङ्कर चौबीस होते हैं ।

प्रश्न ३ - तीर्थङ्कर की पहचान कैसे होती हैं ?

उत्तर - तीर्थङ्कर की पहचान चिन्हों से होती है ।

प्रश्न ४ - तीर्थङ्कर के नाम; चिन्ह सहित गाकर सुनाइए ?

उत्तर - ऋषभनाथ के **बैल** बोलो, अजितनाथ के **हाथी** ।
सम्भवनाथ के **घोड़ा** बोलो, अभिनन्दन के **बन्दर** ।
सुमतिनाथ के **चकवा** बोलो, पद्मप्रभ के **लाल कमल** ।
सुपार्श्वनाथ के **साँथिया** बोलो, चन्द्रप्रभ के **चन्द्रमा** ।
पुष्पदन्त के **मगर** बोलो, शीतलनाथ के **कल्पवृक्ष** ।
श्रेयांसनाथ के **गैंड़ा** बोलो, वासुपूज्य के **भैंसा** ।
विमलनाथ के **सूकर** बोलो, अनन्तनाथ के **सेही** ।
धर्मनाथ के **वज्रदण्ड** बोलो, शान्तिनाथ के **हिरण** ।
कुन्थुनाथ के **बकरा** बोलो, अरहनाथ के **मछली** ।
मल्लिनाथ के **कलश** बोलो, मुनिसुव्रत के **कछुआ** ।
नमिनाथ के **नील कमल** है, नेमिनाथ के **शंख** ।
पार्श्वनाथ के **सर्प** बड़ा है, महावीर के **सिंह** ।

प्रश्न ५ - कौन-कौन से तीर्थङ्कर के चिन्ह अजीव हैं ?

उत्तर - (१) सातवें सुपार्श्वनाथ जी का साँथिया (स्वस्तिक) ।
(२) पन्द्रहवें धर्मनाथ जी का वज्रदण्ड ।
(३) उन्नीसवें मल्लिनाथ जी का कलश ।
इन तीन तीर्थङ्करों के चिन्ह अजीव हैं ।

प्रश्न ६ - कितने व कौन-कौन से तीर्थङ्करों के चिन्ह; स्थलचर पशु के हैं ?

उत्तर - बारह तीर्थङ्करों के चिन्ह; स्थलचर पशु के हैं -

(१) पहले आदिनाथ जी का बैल ।

(२) दूसरे अजितनाथ जी का हाथी ।

(३) तीसरे संभवनाथ जी का घोड़ा ।

(४) चौथे अभिनन्दननाथ जी का बन्दर ।

(५) ग्यारहवें श्रेयांसनाथ जी का गैंड़ा ।

(६) बारहवें वासुपूज्य जी का भैंसा ।

(७) तेरहवें विमलनाथ जी का शूकर ।

(८) चौदहवें अनन्तनाथ जी का सेही ।

(९) सोलहवें शान्तिनाथ जी का हिरण ।

(१०) सत्रहवें कुन्थुनाथ जी का बकरा ।

(११) तेईसवें पार्श्वनाथ जी का सर्प ।

(१२) चौबीसवें महावीर स्वामी का सिंह ।

प्रश्न ७ - कितने तीर्थङ्कर के चिन्ह; जल में उत्पन्न होने वाले जीव हैं ?

उत्तर - छह तीर्थङ्करों के चिन्ह; जल में उत्पन्न होने वाले जीव के हैं -

(१) छठें पद्मप्रभु जी का लाल कमल

(२) नौवें पुष्पदन्त जी का मगर

(३) अठारहवें अरहनाथ जी का मछली

(४) बीसवें मुनिसुव्रतनाथ जी का कछुआ

(५) इक्कीसवें नमिनाथ जी का नीलकमल

(६) बाईसवें नेमिनाथ जी का शंख ।

प्रश्न ८ - कितने तीर्थङ्करों के चिन्ह; एकेन्द्रिय जीव हैं ?

उत्तर - चार तीर्थङ्करों के चिन्ह; एकेन्द्रिय जीव हैं -

(१) छठें पद्मप्रभु जी का लाल कमल

(२) आठवें चन्द्रप्रभु जी का चन्द्रमा

(३) दसवें शीतलनाथ जी का कल्पवृक्ष

(४) इक्कीसवें नमिनाथ जी का नीलकमल ।

प्रश्न - कितने तीर्थङ्करों के चिन्ह मंगलसूचक हैं तथा कितने तीर्थङ्करों के चिन्ह पक्षी के हैं ?

उत्तर - (१) सातवें सुपार्श्वनाथ जी का साँथिया - स्वास्तिक ।

(२) उन्नीसवें मल्लिनाथ जी का कलश; इन दो तीर्थंकरों के चिन्ह मंगलसूचक हैं तथा पाँचवें सुमतिनाथ जी का चिन्ह चकवा पक्षी है ।

प्रश्न - एक से अधिक नाम वाले तीर्थङ्कर कितने हैं; नाम बताइये ?

उत्तर - एक से अधिक नाम वाले चार तीर्थङ्कर हैं -

पहले आदिनाथ जी के तीन नाम -

(१) आदिनाथ; (२) ऋषभनाथ; (३) वृषभनाथ ।

नवमें पुष्पदन्त जी के दो नाम -

(१) पुष्पदन्त; (२) सुविधिनाथ ।

इक्कीसवें नेमिनाथ जी के दो नाम -

(१) नेमिनाथ; (२) अरिष्टनेमि ।

चौबीसवें महावीर के पाँच नाम -

(१) वीर; (२) अतिवीर; (३) सन्मति; (४) वर्द्धमान; (५) महावीर ।

प्रश्न - चौबीस तीर्थङ्करों के शरीर का रंग बताइये ?

उत्तर - चन्द्रप्रभ, पुष्पदन्त; **सफेद रंग के ।**

पद्मप्रभ, वासुपूज्य; **लाल रंग के ।**

सुपार्श्वनाथ, पार्श्वनाथ **हरे रंग के ।**

मुनिसुव्रत अरु नेमिनाथ; **काले रंग के ।**

सोलह तीर्थङ्कर; तपे सोने के समान, **पीले रंग के ।**

प्रश्न - चौबीस तीर्थङ्करों की जन्म नगरियाँ कौन-सी हैं ?

उत्तर - आदिनाथ जी; अजितनाथ जी; अभिनन्दननाथ जी; सुमतिनाथ जी

एवं अनन्तनाथ जी, **अयोध्या में** । सम्भवनाथ जी, **श्रावस्ती में** । पद्मप्रभ जी, **कौशाम्बी में** । सुपार्श्वनाथ जी; पार्श्वनाथ जी, **बनारस में** । चन्द्रप्रभ जी, **चन्द्रपुरी में** । पुष्पदन्त जी, **काकंदी में** । शीतलनाथ जी, **भद्दलपुर में**। श्रेयांसनाथ जी, **सिंहपुरी में** । वासुपूज्य जी, **चम्पापुर में** । विमलनाथ जी, **कम्पिला में** । धर्मनाथ जी, **रत्नपुरी में** । शान्तिनाथ जी; कुन्थुनाथ जी; अरहनाथ जी, **हस्तिनापुर में** । मल्लिनाथ जी; नमिनाथ जी, **मिथिला में** । मुनिसुव्रतनाथ जी, **राजगृही में** । नेमिनाथजी, **शौरीपुर में** । महावीर स्वामी, **कुण्डलपुर में** ।

प्रश्न - चौबीस तीर्थङ्करों के मोक्ष स्थान कौन - से हैं ?

उत्तर - आदिनाथ जी **कैलाश पर्वत से** ।
वासुपूज्य जी **चम्पापुर से** ।
नेमिनाथ जी **गिरनार पर्वत से** ।
महावीर स्वामी **पावापुर से** ।
और बीस तीर्थङ्कर **सम्मेद शिखर से** ।

प्रश्न - इस समय कौन-से तीर्थङ्कर का तीर्थ चल रहा है ?

उत्तर - इस समय चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी का तीर्थ चल रहा है ।

प्रश्न - भगवान महावीर स्वामी के माता - पिता का नाम क्या था ?

उत्तर - भगवान महावीर स्वामी की माता के पाँच नाम; त्रिशलादेवी, मनोहरा, पवित्रा, प्रियंकारिणी, प्रियकारिणी एवं पिता का नाम महाराजा सिद्धार्थ था ।

प्रश्न - भगवान महावीर का जन्म; कब हुआ था ?

उत्तर - भगवान महावीर का जन्म; चैत्र शुक्ला त्रयोदशी, सोमवार के दिन हुआ था ।

प्रश्न - भगवान महावीर का मोक्ष; किस दिन हुआ ?

उत्तर - भगवान महावीर का मोक्ष; कार्तिक कृष्णा अमावस्या दीपावली के दिन हुआ था ।

प्रश्न - भगवान महावीर ने विवाह किया था या नहीं ?

उत्तर - भगवान महावीर बाल ब्रह्मचारी थे, उन्होंने अपना विवाह नहीं किया था ।

प्रश्न - बाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्करों कितने हैं, नाम बताइये ?

उत्तर - बाल ब्रह्मचारी; पाँच तीर्थंकर - वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी ।

प्रश्न - तीन पद के धारी तीर्थङ्करों कितने हैं, पद सहित नाम बताइये ?

उत्तर - तीन पद के धारी; तीन तीर्थंकर - शान्ति, कुन्थु, अरहनाथ । चक्रवर्ती, कामदेव, तीर्थङ्कर पदधारी ।

प्रश्न - भगवान किसे कहते हैं एवं कितने होते हैं ?

उत्तर - जो पूर्ण ज्ञानवान हों; उन्हें भगवान कहते हैं, भगवान बहुत होते हैं ।

प्रश्न - ईश्वर किसे कहते है एवं कितने होते हैं ?

उत्तर - जो अनन्त चतुष्टयरूप लक्ष्मी के स्वामी हों; उन्हें ईश्वर कहते हैं, ईश्वर भी बहुत होते हैं ।

प्रश्न - तीर्थङ्कर कैसे बनते हैं ? क्या हम भी बन सकते हैं ?

उत्तर - जो मनुष्य; संसार के सब जीवों के दु:खों को दूर करने की भावना रखते हैं । प्रेम, करुणा, वात्सल्य के कारण तीर्थङ्कर बनते हैं । हाँ; हम भी तीर्थङ्कर बन सकते हैं ।

कहानी

आओ सपना पाठ पढ़ो -
रोज सुबह का पाठ पढ़ो ।
पाठ कविता का ना पढ़ना -
पाठ कहानी का पढ़ना ।
राजा - रानी की न कहानी -
नाना - नानी की न कहानी ।
महावीर की पढ़ो कहानी -
मेरी बहिना बड़ी सयानी ।
त्रिशला जिनकी माता हैं -
पिता सिद्धार्थ कहाते हैं ।
कुण्डलपुर के राज दुलारे -
सब जग की आँखों के तारे ।
चैत्र सुदी तेरस को जन्में -
हर्षे नर-नारी अति मन में ।
बाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्कर -
बारह वर्ष कठिन तप - तपकर ।
पाया केवलज्ञान ही सुन्दर -
हित - उपदेश दिया है सुखकर ।
पावापुर के बीच सरोवर -
दीवाली को मोक्ष गये तब ।

प्रश्न १ - रोज सुबह कौन - सा पाठ पढ़ना चाहिए ?

उत्तर - रोज सुबह धर्म का पाठ पढ़ना चाहिए ।

प्रश्न २ - कहानी कौन - सी पढ़नी चाहिए ?

उत्तर - कहानी महावीर भगवान की पढ़नी चाहिए ।

प्रश्न ३ - महावीर स्वामी ने कितने वर्ष तप किया ?

उत्तर - महावीर स्वामी ने बारह वर्ष तप किया ।

प्रश्न ४ - महावीर स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त कर क्या किया ?

उत्तर - महावीर स्वामी ने केवलज्ञान प्राप्त कर; सबको हितोपदेश दिया और मोक्ष प्राप्त किया ।

प्रश्न ५ - महावीर स्वामी ने हितोपदेश किस भाषा में दिया था ?

उत्तर - महावीर स्वामी ने हितोपदेश सात-सौ लघु भाषा एवं अठारह महा - भाषा में दिया था ।

प्रश्न ६ - महावीर स्वामी ने मोक्ष किस स्थान से प्राप्त किया ?

उत्तर - महावीर स्वामी ने पावापुर के नगरोद्यान से मोक्ष प्राप्त किया ।

नोटः - सरकारी पाठ्य क्रम में भगवान महावीर स्वामी का विवाह हुआ था, ऐसा लिखा है जो श्वेताम्बर जैन आम्नाय के अनुसार लिखा है एवं पढ़ाया जाता है, किन्तु दिगम्बर जैन आम्नाय में भगवान महावीर स्वामी ने विवाह नहीं किया था, अतः वे बाल ब्रह्मचारी तीर्थङ्कर थे ।

जगत कैसे बना ?

जानों कैसे बना जगत है ?
जीव - अजीव, दो मूल द्रव्य हैं ॥

जीव द्रव्य, संसारी - मुक्त दो ।
संसारी के, त्रस-थावर दो ॥

त्रस दो, विकलेन्द्रिय - सकलेन्द्रिय ।
विकलेन्द्रि, दो - तिय - चौ - इन्द्रिय ॥

सकलेन्द्रिय दो, सैनी - असैनी ।
पाँच भेद हैं, थावर के भी ॥

पृथ्वी - जल - अग्नि संग वायु ।
वनस्पति में प्राण है - आयु ॥

मुक्त जीव दो, सकल - निकल हैं ।
द्रव्य - अजीव के; पाँच भेद हैं ॥

पुद्गल - धर्म - अधर्म साथ में ।
जीव नहीं; आकाश - काल में ॥

इन सबसे ही जगत बना है ।
ये अनादि से "अमित" कहा है ॥

प्रज्ञाश्रमण मुनि

द्रव्य

प्रश्न १ - संसार में मूल द्रव्य कितने हैं ?

उत्तर - संसार में मूल द्रव्य दो हैं - (१) जीव; (२) अजीव ।

प्रश्न २ - जीव द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिसमें जानने-देखने की शक्ति हो; उसे जीव द्रव्य कहते हैं ।

प्रश्न ३ - जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - जीव के दो भेद हैं - (१) संसारी; (२) मुक्त ।

प्रश्न ४ - संसारी जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - संसारी जीव के दो भेद हैं - (१) त्रस; (२) स्थावर ।

प्रश्न ५ - त्रस जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - त्रस जीव के दो भेद हैं - (१) विकलेन्द्रिय; (२) सकलेन्द्रिय ।

प्रश्न ६ - विकलेन्द्रिय जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - विकलेन्द्रिय जीव के तीन भेद हैं - (१) दो इन्द्रिय; (२) तीन इन्द्रिय; (३) चार इन्द्रिय ।

प्रश्न ७ - सकलेन्द्रिय जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - सकलेन्द्रिय जीव के दो भेद हैं - (१) सैनी; (२) असैनी ।

प्रश्न ८ - स्थावर जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - स्थावर जीव के पाँच भेद हैं - (१) पृथ्वी कायिक; (२) जल कायिक; (२) अग्नि कायिक; (४) वायु कायिक; (५) वनस्पति कायिक ।

प्रश्न ९ - मुक्त जीव के कितने भेद हैं ?

उत्तर - मुक्त जीव के दो भेद हैं - (१) सकल परमात्मा; (२) निकल परमात्मा ।

प्रश्न १० - अजीव किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिसमें जानने-देखने की शक्ति नहीं हो; उसे अजीव कहते हैं ।

प्रश्न ११ - अजीव कितने प्रकार के होते हैं; नाम बताओ ?

उत्तर - अजीव पाँच प्रकार के होते हैं - (१) पुद्गल; (२) धर्म; (३) अधर्म; (४) आकाश; (५) काल ।

प्रश्न १२ - पुद्गल किसे कहते हैं ?

उत्तर - पूरण-गलन स्वभाव वाले को पुद्गल कहते हैं ।

प्रश्न १३ - धर्म द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो चलते हुए जीव और पुद्गल को चलने में सहयोगी हो; उसे धर्म द्रव्य कहते हैं । जैसे - चलती हुयी मछली को जल ।

प्रश्न १४ - अधर्म द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो ठहरते हुए जीव और पुद्गल को रुकने में सहयोगी हो; उसे अधर्म द्रव्य कहते हैं । जैसे - ठहरते हुए पथिक को वृक्ष की छाया ।

प्रश्न १५ - आकाश द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो सभी द्रव्यों को रहने का स्थान दे; उसे आकाश द्रव्य कहते हैं ।

प्रश्न १६ - काल द्रव्य किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो सभी द्रव्यों के परिवर्तन में सहयोगी हो; उसे काल द्रव्य कहते हैं ।

स्वस्थ्य शरीर

राहुल आकर भोजन कर -
रोटी - शाक का भोजन कर ।
दाल - चावल का भोजन कर -
शाकाहारी - भोजन कर ।
दिन में ही भोजन करना -
रात में भोजन मत करना ।
रात में चिड़ियाँ न खातीं -
रात में तोते न खाते ।
रात के भोजन में देखो -
कीट - पतंगे मर जाते ।
दिन में भोजन करने से -
पापों से हम बच जाते ।
शुद्ध - साफ भोजन करने से -
स्वस्थ्य शरीर को हम पाते ।

प्रश्न १ - हमें भोजन कैसा करना चाहिए ?

उत्तर - हमें रोटी - शाक, दाल - चावल का शाकाहारी भोजन करना चाहिए ।

प्रश्न २ - शाकाहार किसे कहते हैं ?

उत्तर - शुद्ध-सात्त्विक भोजन को शाकाहार कहते हैं ।

प्रश्न ३ - भोजन कब करना चाहिए ?

उत्तर - भोजन दिन में ही करना चाहिए ।

प्रश्न ४ - रात्रि में कौन - कौन नहीं खाते ?

उत्तर - रात्रि में चिड़ियाँ, तोते आदि पक्षी नहीं खाते ।

प्रश्न ५ - दिन में भोजन करने से लाभ बताइये ?

उत्तर - दिन में भोजन करने से हम पापों से बचते हैं तथा भोजन शुद्ध होने से हम स्वस्थ्य रहते हैं ।

प्रश्न ६ - रात्रि में भोजन करने से हानि बतलाइये ?

उत्तर - रात्रि में भोजन करने से पाप लगता है तथा रात्रि में कीट-पतंगे भोजन में गिरने से भोजन अशुद्ध हो जाता है; जिससे हम बीमार हो जाते हैं, अतः हमें दिन में ही भोजन करना चाहिए ।

नोटः - रात्रि में बना हुआ भोजन भी हमें नहीं खाना चाहिए, क्योंकि रात्रि के बनें भोजन में चूहा, सर्प, छिपकली, झींगुर, कॉक्रोंच, मक्खी, मच्छर आदि विषैले जीव असावधानी से भोजन में गिर जाते हैं और भोजन को जहरीला एवं अशुद्ध बना देते हैं। जिसके सेवन करने से लोग बीमार होकर मृत्यु तक को प्राप्त हो जाते हैं । अखवारों में आये दिन अशुद्ध भोजन के सेवन से बीमार एवं मृत्यु को प्राप्त होने की सूचनायें छपती हैं, अतः हम सभी को दिन में ही शुद्ध भोजन करना चाहिए ।

इन्द्रिय - कथा

बच्चो इन्द्रियाँ होती पाँच -
चमड़ी, जिह्वा, नाक, आँख, कान।
चमड़ी से हम छूआ करते -
जिह्वा से हम सब रस चखते।
नाक सुगन्धी है लेती -
आँख चित्र को बतलाती।
कान शब्द को सुन लेती -
चमड़ी में मोटा हाथी।
जिह्वा में मछली काँटा -
भौंरा फूल में है मरता।
हिरण शब्द में रहता लीन -
कीट - पतंगा दीप विलीन।
ये पाँचों के पाँचों जीव -
आसक्ती से मरें सदीव।
इक - इक इन्द्रिय की यह कथा -
इनसे कोई कैसे बचा ?।
जो पाँचों के संग में रचा -
"अमित" मनुज की क्या हो कथा ?।

प्रज्ञाश्रमण

इन्द्रिय - विषय

स्पर्शन के जानो भाई -
आठ भेद सबको दुखदाई ।
हल्का, भारी, ठंडा, गरम -
रूखा, चिकना, कड़ा, नरम ।
रसना पाँच रसों को चखना -
इतना खाओ रोग से बचना ।
खट्टा, मीठा, चरपरा लगना -
कडुआ, कषायला रस में गिनना ।
घ्राण - नाक के दो हैं छेद -
सूंघों इनसे दो हैं भेद ।
गंध - सुगंधी से खुश होते -
दुर्गंधी से सब हैं रोते ।
दो चक्षु हैं वस्तु अनेक -
पाँच रंग के देखो भेद ।
रंग देखत ही खुशी या खेद -
काला, पीला, नीला, लाल, सफेद ।
कर्ण - कान से सुनना गीत-
सप्त स्वरोंमय है संगीत ।
सा - रे - गा - मा - पा - धा - नी -
"अमित" गुरु की है वाणी ॥

प्रज्ञाश्रमण मुनि

प्रश्न १ - इन्द्रिय किसे कहते हैं ?

उत्तर - जिनसे संसारी जीव की पहचान होती है, उसे इन्द्रिय कहते हैं ।

प्रश्न २ - इन्द्रियाँ कितनी होती हैं, नाम बताओ ?

उत्तर - इन्द्रियाँ पाँच होती हैं - (१) स्पर्शन-त्वचा-चमड़ी; (२) रसना - जीभ-जिह्वा; (३) घ्राण-नाक; (४) चक्षु-आँख; (५) कर्ण - कान ।

प्रश्न ३ - पाँचों इन्द्रियाँ क्या - क्या करती हैं ?

उत्तर - (१) स्पर्शन से छूना; (२) रसना से चखना; (३) घ्राण से सूंघना; (४) चक्षु से देखना; (५) कर्ण से सुनना ।

प्रश्न ४ - पाँचों इन्द्रियों में कौन - कौन से जीव आसक्त हैं ?

उत्तर - (१) स्पर्शन में हाथी; (२) रसना में मछली; (३) घ्राण में भौंरा; (४) चक्षु में पतंगा; (५) कर्णेन्द्रिय में हिरण आसक्त रहते हैं ।

प्रश्न ५ - हमारी कितनी इन्द्रियाँ हैं ?

उत्तर - हमारी पाँचों इन्द्रियाँ हैं ।

प्रश्न ६ - कौन - से जीव कितने इन्द्रिय हैं ?

उत्तर - पंच स्थावर, एकेन्द्रिय ।

लट - केंचुआ, द्वीन्द्रिय ।

चीटी - बिच्छु, तीनेन्द्रिय ।

भौंरा - पतंगा, चार इन्द्रिय ।

हाथी - घोड़ा, पंचेन्द्रिय ।

गतियों का संसार

बच्चो गतियाँ होती चार -
इन गतियों का करो विचार ।
नरक - पशु - नर - देव निहार -
नरक में होते दुःख अपार ।
पशु गति बिल्ली, बन्दर जानों -
मनुज गति को तुम पहचानों ।
देवों का सुख है नहिं सार -
मोक्ष - पुरी का करो विचार ।
चारों गतियाँ कहाँ - कहाँ हैं ?
मोक्ष - पुरी का मार्ग कहाँ हैं ?
नरक गति पृथ्वी के नीचे -
तिर्यञ्च गति सब लोक में फैली ।
मनुज गति ढ़ाई द्वीप में रहती -
मध्य लोक में भवन - त्रय की ।
वैमानिक उर्ध्वलोक में बसती -
मोक्ष - पुरी है सिद्ध - शिला पर ।
रत्नत्रय पाने का द्वार -
जिससे मिटे "अमित" संसार ।

प्रश्न १ - गति किसे कहते हैं ?

उत्तर - संसारी जीव की पर्याय - विशेष को गति कहते हैं ।

प्रश्न २ - गतियाँ कितनी होती हैं ?

उत्तर - गतियाँ चार होती हैं -

(१) नरक गति; (२) तिर्यञ्च गति; (३) मनुष्य गति; (४) देव गति ।

प्रश्न ३ - तुम्हारी कौन - सी गति है ?

उत्तर - हमारी मनुष्य गति है ।

प्रश्न ४ - चारों गतियों में से उत्तम गति कौन-सी है ?

उत्तर - चारों गतियों में से मनुष्य गति उत्तम है ।

प्रश्न ५ - मनुष्य गति ही उत्तम क्यों है ?

उत्तर - मनुष्य गति से ही मोक्ष पद की प्राप्ति होती हैं ।

प्रश्न ६ - चारों गतियाँ कहाँ - कहाँ हैं ?

उत्तर - नरक गति, पृथ्वी के नीचे ।
तिर्यञ्च गति, सब लोक में फैली ।
मनुष्य गति, ढ़ाई द्वीप में रहती ।
देवगति, भवनत्रिक - मध्यलोक की ।
वैमानिक, ऊर्ध्वलोक में बसती ।

छोटी-सी कहानी

आओ बच्चो सुनों कहानी -
एक था राजा; एक थी रानी ।
एक था उनका प्यारा बेटा -
राजा मरा लड़ाई में ।
रानी मरी कढ़ाई में -
बेटा मरा पढ़ाई में ।
तीनों मर गये -
खतम कहानी ।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

धर्म की रेल

आओ बच्चों खेलें खेल -
एक बनायें धर्म की रेल ।
जीव रहे इसका इंजन है -
दश धर्मों के डिब्बे हैं ।
सम्यग्दर्शन टिकिट है इसका -
सम्यग्ज्ञान की पटरी है ।
सम्यक्चारित्र गुरु चलाते -
पहुँचा देती जल्दी है ।
हम सब मिलकर बैठेंगे -
मोक्ष नगर को पहुँचेंगे ।
वापिस कभी न आयेंगे -
वही पर मौज मनायेंगे ।
"अमित" सौख्य फल पायेंगे,
सिद्ध स्वरूप कहायेंगे ।

प्रश्न १ - धर्म किसे कहते हैं ?

उत्तर - अच्छे कार्य करने को धर्म कहते हैं ।

प्रश्न २ - धर्म से क्या होता हैं ?

उत्तर - धर्म से सच्चे सुख की प्राप्ति होती हैं ।

प्रश्न ३ - मोक्ष कैसे पहुँचते हैं ?

उत्तर -सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र इन तीनों के सहयोग से पहुँचते हैं ।

प्रश्न ४ - धर्म की रेल कहाँ जाती है ?

उत्तर - धर्म की रेल मोक्ष नगर को जाती है ।

प्रश्न ५ - धर्म की रेल मोक्ष नगर से कब लौटती है ?

उत्तर - धर्म की रेल मोक्ष नगर से कभी नहीं लौटती है ।

प्रश्न ६ - मोक्ष में जाकर क्या करेंगे ?

उत्तर - मोक्ष में जाकर सदा मौज मनायेंगे ।

पाँच - पाप कथा

बच्चो पाप पाँच कहलाते -
जिनसे हम सब हैं दुख पाते ।
हिंसा - झूठ करे जे चोरी -
करे कुशील - परिग्रह जोरी ।
हिंसा में धन श्री प्रसिद्ध -
झूठ पाप में सत्यघोष सिद्ध ।
चोरी में तापस की कथा -
करे कुशील कोतवाल फंसा ।
परिग्रह में है श्मश्रु प्रसिद्ध -
पाँच पाप तज "अमित" हो सिद्ध ॥

प्रश्न १ - पाप किसे कहते हैं ?
उत्तर - गलत कार्य करने को पाप कहते हैं ।
प्रश्न २ - पाप कितने एवं कौन - कौनसे हैं ?
उत्तर - पाप पाँच हैं - (१) हिंसा; (२) झूठ; (३) चोरी; (४) कुशील; (५) परिग्रह ।
प्रश्न ३ - पाँचों पापों में कौन - कौन प्रसिद्ध हुए ?
उत्तर - (१) हिंसा में धनश्री; (२) झूठ में सत्यघोष; (३) चोरी में तापस; (४) कुशील में कोतवाल; (५) परिग्रह में श्मश्रु पंडित प्रसिद्ध हुआ ।
प्रश्न ४ - हिंसा पाप किसे कहते हैं ?
उत्तर - किसी जीव को मारना, सताना हिंसा पाप है ।
प्रश्न ५ - झूठ पाप किसे कहते हैं ?
उत्तर - सत्य को छिपाना झूठ पाप है ।

प्रश्न ६ - चोरी पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर - दूसरों की वस्तुओं को बिना पूछे लेना चोरी पाप है ।

प्रश्न ७ - कुशील पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर - दूसरों को गलत दृष्टि से देखना कुशील पाप है ।

प्रश्न ८ - परिग्रह पाप किसे कहते हैं ?

उत्तर - आवश्यकता से अधिक वस्तु का संग्रह करने की प्रवृत्ति को परिग्रह पाप कहते हैं ।

दया - अहिंसा

बच्चो जीव कभी मत मारो -
जीव दया को ही तुम पालो ।
चीटा - चीटीं को मत मारो -
बिल्ली - चूहे को मत मारो ।
जीव बराबर सब में होता -
चाहे हाथी हो या चींटा ।
जैसा दुख ही खुद को होता -
वैसा दुख ही सबको होता ।
किसी जीव को नहीं सताओ -
सब जीवों को मित्र बनाओ ।
जीव दया का पालन करना -
सब जीवों की पीड़ा हरना ।

प्रश्न १ - दया किसे कहते हैं ?

उत्तर - जीवों की रक्षा के भाव को दया कहते हैं ।

प्रश्न २ - दूसरे को सताने (मारने) से क्या होता है ?

उत्तर - दूसरे को सताने (मारने) से हमें भी वैसा ही दुख होता है ।

प्रश्न ३ - सब जीवों के प्रति क्या करना चाहिए ?

उत्तर - सब जीवों के प्रति मित्रता का भाव रखना चाहिए तथा दया करके उनकी पीड़ा दूर करनी चाहिए ।

सत्य-असत्य

बच्चो झूठ कभी मत बोलो -
सत्य वचन को मन से तोलो ।
ऐसा सत्य कभी मत बालो -
जिससे विपत पड़े में डोलो ।
राम नाम को सत्य न कहना -
जब बारात का कहिं हो चढ़ना ।
अर्थी निकले नृत्य न करना -
रोग-शोक में गीत न कहना ।
लालच में भी झूठ न बोलो -
मान में आकर साँच न खोलो ।
पक्षपात भी झूठ कहाता -
सत्य वचन से जोड़ो नाता ।
सत्य कहा "धनदेव" प्रसिद्ध -
झूठ कहा "सत्यघोष" हि-भ्रष्ट ।
हित-मित-प्रिय वचनों से सजना -
"अमित" जगत को बस में करना ।

प्रश्न १ - बोलने के पहले क्या सोचना चाहिए ?

उत्तर - बोलने के पहले सत्य-असत्य का विचार करना चाहिए ।

प्रश्न २ - हमें कैसा सत्य-असत्य नहीं बोलना चाहिए ?

उत्तर - हमें ऐसा सत्य और असत्य नहीं बोलना चाहिए जिससे दूसरों को एवं स्वयं को अर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक हानि होती हो ।

प्रश्न ३ - सत्य-असत्य के क्या उदाहरण हैं ?

उत्तर - बारात निकलते समय "रामनाम" सत्य है, नहीं कहना चाहिए और अर्थी निकलते समय नृत्य नहीं करना चाहिए ।

प्रश्न ४ - सत्य और झूठ कब-कब नहीं बोलना चाहिए ?

उत्तर - मान में आकर सत्य और लालच एवं पक्षपात में आकर में झूठ नहीं बोलना चाहिए ।

बाग-अचौर्य

नीरज भैया चलो घूमने -
बाग चलेंगे फूल सूंघने ।
बाग बहुत ही सुन्दर है -
चिड़िया घर भी अन्दर है ।
पौधों में भी फूल लगे हैं -
डाल - डाल पर फल लगे हैं ।
बिना काम के फूल न तोड़ो -
पौधों की डाली मत मोड़ो ।
मालिक की आज्ञा से तोड़ो -
माली को भी मित्र बना लो ।
चोरी से नित डरते रहना -
गुरुजनों का है नित कहना ।
"तापस" चोरी करते पकड़ा -
"वारिषेण" अचौर्य से पुजता ।

प्रश्न १ - घूमने कहाँ जाओगे ?
उत्तर - घूमने बाग में जायेंगे ।
प्रश्न २ - बाग में क्या - क्या हैं ?
उत्तर - बाग में चिड़िया घर है तथा फल - फूल लगे हैं ।
प्रश्न ३ - फल - फूल कैसे तोड़ना चाहिए ?
उत्तर - फल - फूल मालिक की आज्ञा से तोड़ना चाहिए ।
प्रश्न ४ - बाग में क्या - क्या नहीं करना चाहिए ?
उत्तर - बाग में फल - फूल, पत्ती - डाली नहीं तोड़ना चाहिए, चोरी का कभी नहीं करनी चाहिए ।

कुशील - ब्रह्मचर्य

बुरी नजर मत करो किसी से -
हिल - मिलकर सब रहो खुशी से ।

माता - बहिन सभी का कहना -
रिश्तों में स्वारथ न करना ।

माता - बहिन - सुता पहचानो -
"शील" धरम का गहना मानो ।

भद्दी गाली, भद्दे कपड़े -
काम वासना के ये झगड़े ।

किया कुशील "कोतवाल" मिला -
ब्रह्मचर्य "नीली" की कथा ।

छोड़ वासना आतम जानों -
"अमित" ज्ञान से सब पहचानों ।

तजो परिग्रह

परिग्रह; तृष्णा की जननी है -
लोभ बढ़े ऐसी करनी है ।

चींटी सञ्चे तीतर खाय -
लोभी का धन झूठा खाय ।

खेल - खिलौने जोड़े जाओ -
नये - नये की माँग बढ़ाओ ।

कपड़े - फैशन में भी फंसना -
नये-नये की आहें भरना ।

अपनी चीज छिपाकर रखना -
दूजे; पर की चाहत करना ।

अपरिग्रह में "जयकुमार" प्रसिद्ध -
परिग्रह में है "श्मश्रु" भ्रष्ट ।

तजो परिग्रह खोओ मान -
तभी बनोंगे "अमित" महान ।

कषाय

जो आतम को दुखी करे -
ज्ञानी उसको कषाय कहें ।
क्रोध-मान-माया के संग लोभ -
इनसे आतम में हो क्षोभ ।
गुस्सा करना होता क्रोध -
लालच करना होता लोभ ।
नहीं मानना होता मान -
माया है छल-कपट प्रमान ।
चारों इन कषाय से बचो -
"अमित" रूप फिर अपना लखो ।

प्रश्न १ - कषाय किसे कहते हैं ?

उत्तर - जो आत्मा को दुखी करे; उसे कषाय कहते हैं ।

प्रश्न २ - कषाय कितनी एवं कौन - कौनसी हैं ?

उत्तर - कषाय चार हैं - (१) क्रोध; (२) मान; (३) माया; (४) लोभ ।

प्रश्न ३ - कषाय करने से क्या होता है ?

उत्तर - कषाय करने से जीव; दुर्गतियों के दुख भोगता है ।

प्रश्न ४ - क्रोध किसे कहते हैं ?

उत्तर - गुस्सा करने को क्रोध कहते हैं ।

प्रश्न ५ - मान किसे कहते हैं ?

उत्तर - अहंकार, घमण्ड, अभिमान को मान कहते हैं ।

प्रश्न ६ - माया किसे कहते हैं ?

उत्तर - छल-कपट को माया कहते हैं ।

प्रश्न ७ - लोभ किसे कहते हैं ?

उत्तर - लालच करने को लोभ कहते हैं ।

प्रश्न ८ - तुम्हारे पास कितनी कषाय हैं ?

उत्तर - हमारे पास चारों कषायें है ।

प्रश्न ९ - भगवान के पास कितनी कषायें हैं ?

उत्तर - भगवान के पास एक भी कषाय नहीं है, इसलिये वे भगवान हैं, क्योंकि कषाय वाले भगवान नहीं होते हैं ।

दिन चर्या

सुबह हो गई प्यारे भाई -
लाली छाई है सुख दाई ।
फूल खिल उठे लाल, डाल पर -
चिड़ियाँ चहकें डाल - डाल पर ।
उठकर बैठो आँखें खोलो -
णमोकार से मुख को खोलो ।
पंच प्रभो की जय - जय बोलो -
छोड़ बिस्तरा मुँह को धोलो ।
पाठ धर्म का पहले खोलो -
पढ़ो - सुनाओ - लिखकर देखो ।
नहा सुबह ही मंदिर जाओ -
बाद में आकर भोजन खाओ ।
भोजन कर पढ़ने को जाओ -
पढ़कर जल्दी घर पर आओ ।
हाथ - पैर धो भोजन खाओ -
पीछे खेलो फुरती दिखाओ ।

सबक मिला जो याद कराओ -
"अमित" ज्ञानधन अपना पाओ।

प्रश्न १ - सुबह उठते ही क्या करना चाहिए ?

उत्तर - सुबह उठते ही णमोकार मंत्र पढ़ना चाहिए तथा पंच परमेष्ठियों की जय - जय बोलना चाहिए।

प्रश्न २ - बिस्तर छोड़ कर क्या करना चाहिए ?

उत्तर - बिस्तर छोड़ कर मुँह धोना चाहिए तथा धर्म का पाठ अवश्य पढ़ना चाहिए।

प्रश्न ३ - सुबह नहा कर कहाँ जाना चाहिए ?

उत्तर - सुबह नहा कर मंदिर जाना चाहिए।

प्रज्ञाश्रमण मुनि

मन्दिर बोध

चल रे भाई मन्दिर चल -
प्रभु दर्शन को मन्दिर चल।
मन्दिर में चलने से पहले -
शुद्ध साफ वस्त्रों को पहनें।
मुख में बिस्किट टॉफी न रख -
अष्ट द्रव्य को साथ में रख।
ऊँ ध्वनि संग जय - जय बोलो -
निस्सही - तीन बार में बोलो।
मंगल ध्वनि में घंटा बजाओ -
पाँच पुंज का अर्घ्य चढ़ाओ।
पंचाग - अष्टांग शीश झुकाओ -
गो आसन से पुण्य कमाओ।

गंधोदक लो रोग भगाओ -
तिलक लगाकर मान बढ़ाओ ।
तीन परिक्रमा साथ लगाओ -
दर्शन - पाठ भक्ति से गाओ ।
कायोत्सर्ग करो सुखकारी -
प्रभु मिलन की है तैयारी ।
जिनवाणी के दर्शन करना -
चार पुंज भी आगे रखना ।
समय मिले स्वाध्याय भी करना -
जिनवाणी की भक्ति पढ़ना ।
गुरुजन हों तो दर्शन करना -
तीन पुंज धर विनय भी करना ।
समय मिले उपदेश भी सुनना -
वैय्यावृत्ति गुरु की करना ।
आते समय न पीठ दिखाना -
आस्सही - त्रि बार है कहना ।
नित प्रतिदिन यह क्रम दुहराओ -
"अमित" निधि तुम अपनी पाओ ।

नोटः - मन्दिर जाने की विशेष विधि जानने के लिए मुनि श्री की "मन्दिर" पुस्तक अवश्य पढ़ें । जिसके हिन्दी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ एवं अंग्रेजी संस्करण लगभग दो लाख से ऊपर प्रतियों में छपकर बट चुके हैं ।

पर्यावरण

बादल आये बादल आये -
काले - काले बादल आये ।
सागर से जल भर के लाये -
आसमान में शोर मचाये ।
देख - देख कर नाचे मोर -
करे पपीहा पी - पी शोर ।
मेढ़क लगे टर् टर् टर्राने -
बच्चे लगे इक नाव बनाने ।
रिमझिम - रिमझिम बरसे पानी -
नाचे भैया, गुड़िया रानी ।
वृक्ष लगाओ, ताल बनाओ -
खेतों में पानी पहुँचाओ ।
हरि - भरी हो सारी धरती -
शुद्ध हवा तो तभी मिलेगी ।
जीव - जन्तु भी तभी पलेंगे -
पर्यावरण को शुद्ध करेंगे ।
पानी के बिन सब कुछ शून्य -
सुखी बनाता सबको मानसून ।
"अमित सिन्धु" का कहना है,
प्रकृति साथ में रहना है ।

प्रश्न १ - पर्यावरण किसे कहते हैं?

उत्तर - जीवन जीने के प्राकृतिक साधनों को पर्यावरण कहते हैं।

प्रश्न २ - जीवन जीने के प्राकृतिक साधन क्या हैं?

उत्तर - जीवन जीने के प्राकृतिक साधन पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं वनस्पति हैं।

प्रश्न ३ - पर्यावरण को कैसे सुरक्षित रखें?

उत्तर - पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए सबसे पहले वृक्ष लगायें, क्योंकि वृक्ष लगाने के लिए भूमि अर्थात् पृथ्वी की जरूरत होगी। भूमि में वृक्ष लगाने के बाद उसमें जल डालने की जरूरत होगी। वृक्ष में जल डालने के बाद उसे सूर्य की गर्मी अर्थात् अग्नि की जरूरत होगी, इससे वृक्षों का विकास होगा।

वृक्ष; वायु से कार्बन-डाईऑक्साइड ग्रहण करके शुद्ध आक्सीजन छोड़ते हैं। वृक्षों के होने से वर्षा भी समय पर होती है। वर्षा होने पर पशु-पक्षी, बच्चे, किसान आदि सभी को हर्ष होता है, क्योंकि जल से खेतों को पानी मिलता है एवं पानी से खेती लहराती है। खेती से व्यापार में वृद्धि होती है, व्यापार की वृद्धि से सभी की आर्थिक समस्याओं का समाधान होता है, अतः हम सभी को वृक्ष अवश्य लगाना चाहिए एवं पानी को अनावश्यक खर्च नहीं करना चाहिए, इससे हमारा पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।

पाठ-अभ्यास

प्रज्ञाश्रमण मुनि

पाठ-अभ्यास

प्रज्ञाश्रमण मुनि